चक्रधर शुक्ल

बच्चों की यह माँग

बच्चों की यह माँग
निरर्थक जाए ना,
बस्तों का अब बोझ-
बढ़ाया जाए ना ।

होम वर्क इतना -
देते,थक जाता ,
खेलो नहीं,पढ़ो-
दिनभर पक जाता।

पार्क दूसरों के-
हिस्से में आए,
बच्चे सारे कहाँ-
खेलने जाएं ।

बोझ घटाओ इन
भारी बस्तों का,
नया बना दो इक
उपवन बच्चों का।

काले-काले बादल आए

काले-काले बादल आए
हवा उड़ा कर ले गयी,
बरसी होगी कहीं घटा यह
यहाँ निराशा दे गयी।

धान खेत में सूख रहे हैं
सूखे के आसार जी,
कृषक सोच में बैठे हैं सब
कैसे चुके उधार जी।

आस लगाए ताक रहे हैं
समझो यह परेशानी,
गुस्सा छोड़ो बादल भइया
बरसा दो फिर पानी।

बच्चों ने जब करी प्रार्थना
बादल भइया हर्षे,
नीलगगन में छाए बादल
जमकर दिनभर बरसे।

एल आई जी-1 सिंगल स्टोरी बर्रा -6
कानपुर

ISSN:2583-8849